वक्तव्य देते हुए डॉ. कैलाश चन्द्र मिश्र, मंच पर प्रो. अनिल के.राय अंकित व प्रो. के.के. सिंह

रोटी की भूख से है बढ़कर ज्ञान की भूख

हिंदी वि.वि. में मीडिया संवाद कार्यक्रम में डॉ.कैलाश चंद्र मिश्र का उदबोधन

वर्धा, 18 मार्च, 2011; महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के जनसंचार विभाग की ओर से आयोजित मीडिया संवाद कार्यक्रम में 'महापंडित राहुल सांकृत्यायन, पर्यटन और यात्रा वृतांत'' विषय पर विशेष व्याख्यान देते हुए नव परिमल साहित्य के उपाध्यक्ष एवं उ.प्र. पर्यटन के पूर्व संयुक्त निदेशक डॉ. कैलाश चन्द्र मिश्र ने कहा कि राहुल सांकृयायन जी ज्ञान की भूख को रोटी की भूख से बढकर मानते थे। उन्होंने तो ज्ञान की खोज में गौतम बुद्ध की भांति 11 वर्ष की अवस्था में ही अपनी पत्नी को छोड़कर गृहत्याग किया, उनके द्वारा किया गया यह कार्य बाल विवाह के प्रति एक तमाचा था। उन्होंने राहुलजी को ज्ञान के अथाह सागर बताते हुए कहा कि उन्होंने पौराणिक ग्रंथों को जनता की भाषा में जन-जन तक पहुंचाया। पर्यटन का मतलब समाज की वास्तविक सिथतियों से रू-ब-रू कराना है का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा पर्यटन सिर्फ पैसे वालों के लिए ही नहीं है, समाज में कुछ करने की ईच्छाशक्ति है तो पैदल भी भ्रमण कर देश व समाज कुछ नया दे सकते हैं। महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने गरीबी में देशभर का भ्रमण किया। उनकी यात्रा केवल दर्शनीय स्थलों को देखने की ही नहीं थी अपितु इस देश की आत्मा को पहचानने की थी। वे तो मानते थे कि सामान्य जन की भांति घूमेंगे तो समाज को देख पाएंगें। वे जहां भी गए, यात्रावृतांत के माध्यम से वहां की वास्तविक स्थिति से रू-ब-रू कराया। उन्होंने कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक का भ्रमण किया। वे कुमायूं गए, तिब्बत गए। तिब्बत से तो उन्होंने 2600 ग्रंथों को खच्चर पर लादकर भारत ले आए। इस देश का दुर्भाग्य है कि आज भी इन ग्रंथों पर कुछ काम नहीं हुआ है। एक लेखक, संपादक, कोशकार, एक अच्छे प्रशासक व यायावर के रूप में राहुल जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने नौजवानों से आह्वान किया कि उन्हें सांकृत्यायन जी को पढना चाहिए। उन्होंने कहा कि राहुल जी जैसे व्यक्ति आज होते तो इस देश का नक्शा कुछ और होता। डॉ.मिश्र ने कहा कि आज लोगों ने पर्यटन को एक विभाग का विषय बना दिया है बल्कि यह हर विषयों से जुड़ा हुआ है। उन्होंने कहा कि पर्यटन की समस्या इन्फ्रास्ट्रक्चर की नहीं है अपितु इस देश की सही तस्वीर को प्रोजेक्ट करने की है। अगर पर्यटन को बढावा देना है तो इस देश की गौरवशाली परंपरा को चित्रित करना होगा। विशेष व्याख्यान समारोह की अध्यक्षता करते हुए साहित्य विद्यापीठ के प्रो.के.के.सिंह ने कहा कि आज का दौर स्मृतिहीनता का है। कुछ छिपी ताकतें चाहती हैं कि हम अपनी

विरासत को भूलते जाएं। जेल में रहते हुए राहुल जी ने दर्शन और दिग्दर्शन जैसा महान ग्रंथ लिखा। यह विश्वविद्यालय उनके साहित्य में अमूल्य योगदानों की याद में केन्द्रीय पुस्तकालय का नाम महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन के नाम पर रखा है। राहुल जी को संवेदनशील व्यक्ति बताते हुए उन्होंने कहा कि बिहार के सीवान जिले के आमवारी गांव में जमींदारों की सामंती व्यवस्था के विरोध में वे किसानों, मजदूरों के साथ जीने मरने को तैयार थे। राहुल जी ने सामंतवादी जमींदारी व्यवस्था के विरोध में झंडा उठाया था, हमें राहुल जी के जीवन से सीख लेने की जरूरत है। मंच का संचालन जनसंचार के रीडर डॉ.कृपाशंकर चौबे ने किया। आभार व्यक्त करते हुए जनसंचार के विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल के.राय अंकित ने कहा कि पर्यटन और यात्रा वृतांत पत्रकारिता सं संबंधित है। जिस प्रकार से राहुल सांकृत्यायन ने समाज को समझने के लिए पर्यटन को अपनाया। आज हमें अपने आपको कमरे में बंद न करें अपितु देश व समाज से जुड़े। इस अवसर पर विवि के डॉ. फरहद मलिक, डॉ.अशोकनाथ त्रिपाठी, डॉ.अख्तर आलम, डॉ.राजेश लेहकपरे सहित बड़ी संख्या में शोधार्थी व विद्यार्थी उपस्थित थे।

प्रस्तुति- अमित कुमार विश्वास,

पी.एच-डी. शोधार्थी, म.गा.अं.हिं.वि.वि., वर्धा